ज्ञान-वीणा वादिनी मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती

दादी निर्मलशांता

दैवी गुणों ने मम्मा को यज्ञमाता बनाया

मम्मा बहुत ही गुणवान थीं। वह गुप्त तपस्विनी थीं। दफ्तर में साधारण लगती थीं लेकिन वह गुणों की खान थीं। हमने तो जीवन में, मम्मा का मूड ऑफ होते कभी नहीं देखा। बाबा के हर वचन का पालन शीघ्र और सम्पूर्ण रूप से किया करती थीं। मम्मा में पालना की शक्ति अद्भुत थी। मैं मम्मा को 'माँ', 'मम्मा' कहती थी और लौकिक माँ को 'जशोदा मैय्या' कहती थी। इतनी पालना की शक्ति और प्यार की शक्ति थी मम्मा में! मैं तो बचपन से ही बहुत लाड-प्यार से पली थी। मुझे अपने व्यक्तिगत काम ही करने नहीं आते थे। अपने बाल भी बनाने नहीं आते थे। लेकिन मम्मा ने मुझे हर कार्य करना सिखाया। गाड़ी चलाना, ज्ञान समझाना, बर्तन मांजना आदि-आदि। इसका आधार मम्मा की स्नेह-शक्ति और पालना-शक्ति थी। इन्हीं श्रेष्ठ संस्कारों ने, मीठे स्वभाव ने एवं दैवी गुणों ने मम्मा को यज्ञमाता बनाया। हम मम्मा-बाबा के तख्तनशीन कैसे बनें? पहली बात है, कोई भी गलती न करो। काम, क्रोध...आदि का अंश मात्र भी न हो, देह-अभिमान न हो, निरन्तर अशरीरी स्थिति में रहो, दिल से बाबा को याद करो और सेवा करो। तब मम्मा-बाबा के तख्तनशीन बनेंगे। मम्मा एकदम रॉयल थी। वह कभी जोर से नहीं हंसती थी। सिर्फ मुस्कराती थीं। मम्मा में गुस्सा था ही नहीं। मम्मा कहती थी कि काम, क्रोध, अहंकार आदि नरक के द्वार हैं इसलिए तुम बच्चों को कभी गुस्सा नहीं करना है। अगर कोई गुस्सा करता था तो उस समय मम्मा हंसते-हंसते बोलती थी, देखो गुस्से को क्या कहते हैं, क्रोध कहते हैं ना! क्रोध को भूत कहा जाता है। क्रोध आया माना अपने अंदर भूत प्रवेश हो गया। इसलिए कभी भूत नहीं बनना अर्थात् क्रोध नहीं करना। कुछ भी हो जाये लेकिन क्रोध नहीं करना। कोई आवाज से बोलता था तो मम्मा उसको प्यार से समझाती थी, देखो तुम आश्रम में रहते हो, ऊँची आवाज से नहीं बोलना चाहिए, बहुत धीमे से बोलना चाहिए। शांति से बोलना चाहिए। बहुत कम बोलना चाहिए, मीठा बोलना चाहिए। यदि किसी ने कोई बड़ी गलती भी की हो तो भी उनको कहती थी, ''इधर आओ, यह ठीक हुआ?'' जो गलती करेगा भला वो कैसे कहेगा कि यह ठीक हुआ। तो मम्मा कहती थी, ''आगे के लिए ध्यान रखो, दुबारा ऐसी गलती नहीं होने देना।'' मम्मा कभी यह नहीं पूछती थी कि यह गलती क्यों हुई? जो हुआ सो हुआ लेकिन उसको प्यार से सुधारने की युक्ति और शक्ति प्रदान करती थी। इस प्रकार प्यार से, इशारे से उस व्यक्ति के हृदय का परिवर्तन कर देती थी। मुझे साक्षात्कार तो नहीं होता था मगर मैं जब भी मम्मा को देखती थी तो मुझे लगता था कि यह लक्ष्मी ही बनेगी, यह सतयुग की महारानी है। मैं सेवा नहीं करती थी, शहजादी जैसे रहती थी। मम्मा मुझे मुस्कराते हुए कहती थी, जाओ बच्ची, उनको ज्ञान समझाओ। सेवा करोगे तो मेवा मिलेगा। जाओ उनको बाबा का ज्ञान सुनाओ। इस प्रकार मम्मा ने मुझे ज्ञान समझाना सिखाया, सेवा करना सिखाया।

दीदी निर्मला

वह मेरी अलौकिक जन्मदात्री थीं

यह हमारा सौभाग्य था जो इस ज्ञानी जीवन में न सिर्फ मम्मा से मिलना हुआ बल्कि उन द्वारा पालना भी हुई। मेरे ज्ञान में आने के बाद भले ही वे दो-ढ़ाई वर्ष साकार में थीं परन्तु मैजारिटी समय उन्होने मुम्बई में व्यतीत किया। इसलिए शुरू-शुरू में मम्मा से मुझे काफी पालना मिली। बाबा मेरे लिए कहते थे, यह मम्मा का फूल है, मम्मा की रचना है।

मर्यादापुरूषोत्तमें - मम्मा ने अमृतवेला कभी मिस नहीं किया। एक बार मुम्बई में एक मंत्री मम्मा से मिलने आये। मंत्री के जाते-जाते लेट हो गई। दूसरे दिन मम्मा अपनी दिनचर्या के अनुसार सुबह दो बजे ही उठी। उन दिनों मम्मा रमेश भाई (शाह) के घर में रहती थी। तब रमेश भाई ने पूछा, मम्मा, आप तो देर से सोई होंगी फिर आप अपने समय पर इतनी जल्दी उठ गयीं? तब मम्मा ने कहा, देखो उस मिनिस्टर की अपॉइन्टमेण्ट के कारण मैं रात को जाग सकती हूँ तो सबेरे अमृतवेले मेरी अपॉइन्टमेन्ट हमारे पियू के साथ होती है, यह हम कैसे मिस कर सकते हैं। इस प्रकार, मम्मा ने कभी अमृतवेला मिस नहीं किया। मेरे अलौकिक जन्म और समर्पण में माँ सरस्वती का ही पूरा योगदान है। वे ही मेरी अलौकिक जन्मदात्री हैं और भाग्यविधात्री हैं। शिव बाबा ने ज्ञान का भण्डार देकर हमको ज्ञान से मालामाल कर दिया लेकिन मम्मा ने तो प्रैक्टिकल में जीवन की रीति और नीति सिखाकर हमें महान बना दिया।

दादी प्रकाशमणि

त्याग व सर्व गुणों की मूरत

मम्मा के साथ रहकर हमने उनसे शिष्टाचार सीखा है। इस तरह, ॐ राधे हमारी माँ भी थी, सखी भी थी, प्यारी भी थी, मीठी भी थी और अम्बा भी थी। मीठी मम्मा के जितने ही गुण गायें उतने थोड़े हैं। जितनी मम्मा ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा थी उतनी ही शिव शक्ति माँ थी। मम्मा त्याग की भी और सर्व गुणों की भी मूरत थी। बाबा कहते हैं निश्चय बुद्धि विजयन्ति, वो एक सेकण्ड का प्रैक्टिकल सबूत हमने मम्मा में पूरा देखा। मम्मा को बाबा ने देखा या बाबा को मम्मा ने देखा लेकिन बाबा ने कहा, 'ओ राधे, तुम अनुराधे हो, जगदम्बा हो। जबकि सामने आयी ही थे, सबकी माँ हो। मम्मा के आने से ही बाबा ने उनकी सारी जन्मपत्री ऐसी सुनायी कि हम भी देखते रह गये। हमने भी प्रैक्टिकल में देखा कि मम्मा ने भी उसी निश्चय से उस बात को स्वीकार किया, पुरूषार्थ किया और उसी प्रकार बन गयी।

वीणावादिनी माँ सरस्वती ज्ञान की वीणा इतना मधुर सुनाती थी कि सुनने वालों का मन हर्षित होता था। ज्ञान की देवी सरस्वती की मुरली राज भरी और गहराई भरी होती थी। मम्मा निर्भय दुर्गा माँ थी, शक्ति माँ थी। मम्मा आने से ही सिद्ध हुई जो बाबा कहता है विजयमाला का मेरू दाना। आने से ही लगा मम्मा सर्वगुणों की खान है।

मर्यादायुक्त तथा सभ्यतायुक्त

मम्मा, बाबा की इतनी इज्जत करती थी कि बाबा के प्रति किसी से भी ऐसे-वैसे साधारण शब्द भी नहीं सुन सकती थी। एक बार की बात है। हम बाबा के साथ खेलकर आयी थीं। तब मैं मम्मा से बोली, 'मम्मा' हमने आज बाबा को जीत लिया। तो मम्मा कहती हैं, चुप, ऐसा कहा जाता है क्या कि मैने बाबा को जीत लिया? फिर हम कहते थे, हाँ मम्मा, सच मैने बाबा को जीता है। तब मम्मा कहती थी, भले, तुम जीते हो लेकिन ऐसे थोड़े ही कहा जाता है कि मैने बाबा को जीता है? तुमने खेल को जीता है, बाबा को नहीं इसलिए ऐसे बोलो कि मैने खेल जीता है। मम्मा हर शब्द का यथार्थ अर्थ बताकर उसको ठीक रूप से इस्तेमाल करने के लिए कहती थी। मम्मा हर बात में मर्यादायुक्त , सभ्यतायुक्त रहती थी। वीणावादिनी माँ सरस्वती ज्ञान की वीणा इतना मधुर सुनाती थी कि सुने वालों का मन हर्षित होता था। ज्ञान की देवी सरस्वती की मुरली राजभरी और गहराई भरी होती थी।

दादी मनोहरइन्द्रा

सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि

मम्मा को, बाबा के बारे में कभी रिंचक मात्र भी संशय नहीं आया। साकार बाबा में सदा निराकार बाप को ही देखा। बाबा ने जो भी कहा, मम्मा ने उसको करके ही दिखाया। इतनी आज्ञाकारी और वफादार थी जगदम्बा माँ। बाबा का हर संकल्प तक मम्मा को प्यारा लगा। जब डाक्टर ने कहा कि मम्मा को आपरेशन कराना ही पड़ेगा, बिना आपरेशन यह बीमारी ठीक नहीं हो सकती तब बाबा ने कुछ नहीं कहा, चुप रहे और बाद में कहा कि बाबा को आपरेशन के लिए प्रेरणा नहीं आती। इस बात पर भी मम्मा राजी ही रही। कभी यह संकल्प नहीं किया कि डाक्टर ने आपरेशन के लिए कहा, कराना अच्छा रहेगा। नहीं, बाबा को जो पसंद है, मुझे भी वही पसंद है। इतनी वफादार थी मम्मा! मम्मा के शब्द ही थे हुकमी हुकम चलाये। बाबा हुजूर जैसे चाहे वैसे हुकम चलाये, जैसे चाहे वैसे करें, यह सब कुछ उसी का है, मेरा कुछ नहीं। बाबा ने कहा और मम्मा ने दिल से उसको स्वीकार किया। कोई भी प्रश्न नहीं, कोई संशय नहीं, दूसरा कुछ सोचा नहीं। इतना निश्चय और विश्वास था बाबा पर। बाबा भी मम्मा को इतना ही सम्मान देते थे। यज्ञ में कोई बात आयी अथवा कुछ करना होता था तो बच्चों को बाबा यहीं कहते थे मम्मा की क्या प्रेरणा है, पूछकर आओ। मम्मा की राय के बाद मैं अपनी राय दूंगा, यज्ञ माता मम्मा है। इस प्रकार मम्मा से पूछे बगैर बाबा कोई भी कार्य नहीं करते थे। मम्मा ने हमें कहकर कोई सेवा अथवा पाठ नहीं सिखाया, बल्कि पहले खुद करके सिखाया।

मम्मा का स्मरण करते हुए उनका बाबा पर बलिहार होना याद आता है। मम्मा ने श्रीमत को अपने आचरण और व्यवहार में इतना पक्का किया था कि वे इस सबकी उदाहरणमूर्त थीं। बाबा के अलावा कोई और बात उनके चित्र का हिस्सा कभी नहीं बनी।

मम्मा का नाम आते ही ब्रह्माकुमार तथा ब्रह्माकुमारियों के चेहरे खिल उठते हैं। वे जैसे स्मृतियों में खो जाते हैं। जिनकी पालना यज्ञमाता के रूप में प्रसिद्ध जगदम्बा सरस्वती, ओम मण्डली की राधे और ममता से बोले गये नाम मम्मा ने की है, वे तो उन दिनों की याद में ऐसे खो जाते हैं, जैसे वह अभी कुछ समय पूर्व की ही बात है। जिन्होने सुना और पढ़ा है, वे भी स्मृतियों में खोकर उन दृश्यों को इमर्ज करते हैं। ऐसा कोई नहीं है, जो मम्मा के लिए तटस्थ हो।

वे यज्ञमाता थीं। सबकी माँ। पूरे ब्राह्मण परिवार को अपने वात्सल्य भाव से उन्होने पाला, पोषा और संरक्षण दिया। उनका मातृत्व सूरज की रौशनी, वायु या आकाश की तरह बिना किसी भेदभाव के सब पर एक सा था। वे दृढ़ता की मूर्ति

थीं। अवस्थाओं में दृढ़ और परिस्थितियों में अचल, अडोल, निर्भय और निश्चय सम्पन्न। संसार के किसी भी प्रकार के तूफान, लहरें और झंझावात उन्हें हिला नहीं सके। अपनी इसी छत्रछाया में यज्ञ के विघ्नों और विपत्तियों से वत्सों की रक्षा की, उनको संरक्षण दिया। उनके जीवन में अनेक घटनायें ऐसी हुईं जो विकराल रूप धारण किये हुए थीं परन्तु वे इस विविधता पूर्ण विश्व नाटक में अटल निश्चय होने के कारण सदा निश्चिन्त रहती थीं।

मातेश्वरी जी की स्थिति संसार के आकर्षणों से ऊँचा उठ कर शिव परमात्मा के आकर्षण-क्षेत्र में रहती थी। भले ही उनका तन इस संसार में था परन्तु बुद्धि शिव पिता से जुड़ी रहती थी। मम्मा के बारे में उनकी साकार पालना पाये बच्चों के निराले अनुभव हैं। कुछ अनुभव यहां प्रस्तुत हैं जिनसे उस आकाश जैसे फैले व्यक्तित्व को कुछ-कुछ समझा जा सकेगा।

मम्मा का रूहानी रूप

दादी जानकी

मम्मा रोज मुरली जरूर पढ़ती थी अथवा टेप द्वारा सुनती थी। भले ही रात के ग्यारह बजे हों लेकिन कल की मुरली सुनकर ही मम्मा सोती थी। जितनी अपने कर्त्तव्य पर पक्की रहीं उतनी ही ईश्वरीय पढ़ाई पर भी पक्की रहीं। हॉस्पिटल में भी मम्मा रोज मुरली सुनती थी। हमने मम्मा को सदा अलर्ट और एक्यूरेट देखा है। हमने कभी भी मम्मा की आँखें थकी हुई नहीं देखी हैं। सदा उनके नयन बाबा की याद में मगन देखे हैं। मम्मा में नम्रता इतनी थी कि जब बाबा कहते थे - मात-पिता का याद-प्यार और नमस्ते, तब मम्मा अपने को माता नहीं समझती थी। ऊपर इशारा करते कहती थी कि उस मात-पिता का याद और प्यार है। मम्मा केवल जिम्मेवारी निभाने में, पालना देने में अपने को माता समझती थी। मम्मा ने माँ का पद स्वीकार नहीं किया परन्तु माँ का कर्त्तव्य स्वीकार कर उसको पूर्णरूपेण निभाया। बाबा के सामने वह एक छोटी, नन्हीं-सी बच्ची का रूप धारण कर लेती थी और यज्ञवत्स और भक्तों के सामने आदि देवी जगदम्बा माँ का रूप धारण कर लेती थी।

रीति-रिवाज, सभ्यता-संस्कृति की जननी

मम्मा ने कभी बाबा को साधारण समझा ही नहीं। बाबा की हर बात को पूर्णत: सम्मान दिया और सम्मान देकर उसका पूरा परिपालन किया। कई बच्चे, बाबा की बात को बहुत साधारण रूप में लेते थे, तो मम्मा सब बच्चों को बिठाकर समझाती थी कि बाबा को साधारण समझने की कड़ी भूल कभी नहीं करना। बाबा का एक-एक बोल बहुत मूल्यवान है। ऐसे कह कर हमें सभ्यता और अनुशासन सिखाती थीं। मम्मा का बोलने का तरीका बहुत सम्मान, प्यार और मिठास वाला होता था। हमें मम्मा ने रीति-रिवाज, सभ्यता-संस्कृति सिखाकर लायक बनाया और एक माँ का पार्ट बजाया और हम बच्चों का गुणों से श्रृंगार कर बाप के सामने रखा।

मम्मा को मैने जब से देखा तबसे उनमें, श्रीलक्ष्मी के सब लक्षण स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ते थे। मम्मा सर्व दैवीगुणों से सम्पन्न थी। मम्मा को देह न्यारी होने के अभ्यास पर बहुत ध्यान रहता था। अशरीरी बनने का जो अभ्यास मम्मा का था वो हम सबके सीखने लायक था। मम्मा के सामने कोई भी आता था कुछ बात करने के लिए, तो उसकी आवाज ही बन्द हो जाती थी अथवा ज्यादा बोल नहीं पाता था। प्यूरिटी की पर्सनालिटी, रॉयल्टी, त्याग, फर्ज-अदाई में सदा नम्बर वन थी। इतनी छोटी आयु में इतना बड़ा परिवर्तन अपने में कर लेना- यह बहुत बड़ी विशेषता थी।

माँ अथवा दैवी शक्ति का अनुभव

ब्र.कु.मोहिनी

मम्मा के नयन, मम्मा की सूरत इतनी रूहानी होती थी कि जो भी उनको एक बार देखता वह जीवन भर नहीं भूलता था। जिन्होने भी मम्मा का प्यार व पालना पायी, वे इस ज्ञान में अचल और अडोल होकर चले हैं और चल रहे हैं। मम्मा का व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली और शक्तिशाली था। मम्मा के सामने कोई भी बाहर का व्यक्ति हो या यज्ञवत्स हो, झूठ नहीं बोल सकता था। उसकी हिम्मत ही नहीं होती थी। उनके सामने आते ही वह उनकी रूहानी दृष्टि से प्रभावित होकर अपने को बच्चा महसूस करता था, उनको अपनी माँ अथवा दैवी शक्ति अनुभव करता था। बात जैसी होती थी वैसी ही कह देता था। मम्मा के मुख से कभी भी ये शब्द नहीं निकले कि हम कोशिश करेंगे, देखेंगे। बाबा ने कहा और मम्मा अपनी सेना को साथ लेकर उस कार्य में तत्पर हो गयी क्योंकि मम्मा हमें यही कहती थी कि यह कार्य किसने सौंपा है। अगर यह कार्य न होने वाला होता, तो वो क्यों कहते? बाबा ने यह कार्य हमें ही क्यों कहा? उसको करने की योग्यता हमारे में है इसलिए कहा है ना। बाबा की कोई भी आज्ञा अथवा सेवा के लिए ''ना'' नहीं कहना। इस तरह, मम्मा से बहुत प्रेरणा लेकर आध्यात्मिक जीवन को उन्नति के शिखर पर पहुँचे हैं। भिन्न-भिन्न संस्कारों वाले यज्ञ-वत्सों को संस्कारों की भट्ठी में से उन्हीं ने ही उज्जवल किया और एक-एक को ज्ञान-मुरली सुनाकर, ज्ञान पालना दी।

एक बाबा दूजो ना कोय

दादी हृदयमोहिनी

एक अर्थ में मम्मा ऐसी विशेष थीं भी। ब्रह्मा बाबा के तन का आधार तो स्वयं शिव परमात्मा ने लिया और उन्हें ब्रह्मा के रूप में प्रकाशित किया। उन्हें वह सब कुछ बताया-समझाया और नये युग की रचना का निमित्त बनाया। पर मम्मा तो अन्य यज्ञ वत्सों की तरह मुख वंशावली ही थीं और देखते ही देखते अपने गुणों, धारणाओं और विशेषताओं से सबकी प्रिय और पालनहार बनीं। वे सच्ची उदाहरण थीं, बाबा की श्रीमत के अनुपालन की।

एक बार उनसे पूछा गया कि इतने कम समय में इतनी ऊँच स्थिति कैसे पाई। मम्मा ने कहा - '' हाँ जी का पाठ पक्का किया है। '' बाबा की श्रीमत पर अन्य कोई मत कभी हावी नहीं होती। शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा के आदेश अंतिम रहे हैं। एक बाबा दूजो ना कोय।

दूसरी बात उन्होंने बतायी कि उन्होंने मुरली सदा ही सुनी और धारण की। तीसरे, कैसी भी परिस्थिति रही हो, वे कभी हारी नहीं।

मम्मा गंभीर भी थी व मृदु भी। गंभीरता का अर्थ यह नहीं कि वे सीरियस रहती थी। वे प्रेम की मूर्ति थी, सौम्य थीं, किसी को उनसे भय नहीं होता था। गंभीरता का अर्थ है सब कुछ समाकर रखना। माँ जैसे अपने बच्चों का सब कुछ समाये रहती है, वैसे ही जगदम्बा भी सभी बच्चों का सबकुछ समाकर उन्हें अच्छी शिक्षाएँ भी देती थी व प्यार भी।

मम्मा दूसरों को शिक्षा नहीं देती थी, परन्तु अपनेपन से, कल्याण की भावना से और अति मृदुता से।

परमात्म-स्मृति में लवलीन

दादी रतनमोहिनी

हुकमी हुकम चलाय रहा - यह मम्मा का विशेष कथन था। इसका अर्थ है कि परमात्मा जो कि ज्ञान का दाता है, स्वयं श्रीमत दे रहा है, हमें आज्ञा कर रहा है, उस पर ही हमें चलना है। जब भगवान कुछ कह रहा हो, तब स्वयं की बुद्धि को चलाना समझदारी नहीं है। भगवान की श्रीमत पर तो आँख मूंद कर चलना चाहिए। श्रीमत ही श्रेष्ठ गति की मत है।

विद्या की देवी सरस्वती

ब्र.कु.निर्वैर

मम्मा जिस विषय को उठाती थी उसकी अत्यंत गहराई में चली जाती थी। विशेष, उन दिनों में मम्मा कर्म के ऊपर बहुत विस्तार से और गहन रूप में समझती थी। परमात्मा के परिचय के बारे में तथा पवित्रता की धारणा के ऊपर भी बहुत गहराई से समझाती थी। गहराई के साथ समझाने की विधि बहुत सरल, सहज और रमणीक होती थी। सुनने वालों को धारणा भारी और कठिन नहीं लगती थी। सचमुच, सुनने वाले को लगता था कि वे विद्या की देवी सरस्वती हैं और उनकी विद्या से उनका जीवन धारणा रूपी धन से सम्पन्न हो रहा है।

उनकी धारणा बहुत उच्च कोटि की थी। मम्मा बोलती बहुत कम थी। केवल क्लास में या किसी से व्यक्तिगत रूप में मिलते समय ही हम उनकी आवाज सुनते थे। परमात्मा की याद में लवलीन रहने की उनकी एक स्वाभाविक स्थिति होती थी। उनके आसपास के प्रकम्पनों से जो अपनेपन का अनुभव होता था वह बहुत सुखद प्रतीत होता था। उनके हर शब्द में ज्ञान समाया रहता था। यूँ कहें, उनके रोम-रोम में ज्ञान समाया हुआ था। उनको देखते ही परमात्मा की याद में हमारा मन मगन हो जाता था। याद करने की मेहनत नहीं करनी पड़ती थी। परमात्म याद सहज आती थी।